Demand to take measures to establish "Hindi" as the main Language in Administration and Education

श्री बृजभूषण तिवारी (उत्तर प्रदेश) : महोदय, एक स्वंतत्र और समृद्ध देश की यह पहली जरूरत है कि वह अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीकों के प्रति सम्मान दर्शाए और उन्हें वाजिब जगह दिलाने की कोशिश करे। परंतु हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी के संबंध में सरकारी रीतियां, नीतियां इस अंदाज से चलती रही है कि स्कूल शिक्षा एंव नौकरी, ऐसे तमाम क्षेत्रों में अंग्रेजी को योग्यता का एकमात्र मानक मान लिया गया है। बाकी विषयों में कोई बड़ी उपलब्धि तभी गितनी में आती हैजब अंग्रेजी की अच्छी जानकारी हो। बहुत से छात्र सामान्यता इसलिए आगे नहीं बढ़ पाते क्योंकि उनका ज्ञान अंग्रेजी में अच्छा नहीं होता। ज्यादातर ऐसे छात्र गरीब क्षेत्रों से गरीब जातियों से आते हैं। इसीलिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 2005 के अध्यक्ष डा0 यशपाल ने सलाह दी है कि अगली कक्षाओं में जाने के लिए अंग्रेजी में पास होने की अनिर्वायता समाप्त की जाए। गौरतलब है कि दसवीं कक्षा में फेल होने वाले विद्यार्थियों में बड़ी संख्या उन लोगों की है, जो अंग्रेजी में पास होने के लिए निर्धारित अंक नहीं ला पाते हैं। दुनिया भर में शिक्षाविदों ने स्वभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाए जाने की वकालत की है। हमारे यहां बच्चो में सीखने की क्षमता में कमी के लिए शिक्षा पद्धति को दोषी माना जाता है। लेकिन इस बात का अध्ययन कराया जाना चाहिए कि अंग्रेजी का दबाव बच्चों में सीखने की क्षमता से लेकर व्यक्तित्व के विकास के दूसरे पक्षों को किस हद तक प्रभावित करता है, ऐसी खबरें आती हैं कि छात्र या कर्मचारी को अंग्रेजी न जानने के लिए इतना अपमानित किया गया कि उसने आतमहत्या कर डाली। भाषा के रूप में अंग्रेजी सहयोगी की भूमिका निभाए।

Concern over Dismal performance of Indian Hockey

SHRI BHARATKUMAR BHAVANISHANKAR RAUT (Maharashtra): It is a matter of grave concern and shame that the Indian Women Hockey Team is also out of the Olympic Games to be held in Beijing. The Men's team is already out of the Olympic Games.

There was a time when India was the undisputed leader in the world hockey. The Indian Women team had also won honours of Gold and Silver Medals in the past. However, the Indian Hockey is now passing through a difficult phase.

The time has come that all those who are concerned for Indian sports must sit together and think about the fate of the game that was once the pride of India. This thinking should be beyond the party-lines. All those who are responsible for bringing the situation to disrepute should be thrown out of the arena. This would bring a new life to the game.

India is having a lot of talented young players with enthusiasm and exuberance. So what we need to do is to keep politics and dirt out of the game. Hence, I request the hon. Minister of Youth Affairs and Sports to look into this and ensure that the Indian Hockey regain its lost glory immediately. Thank you.

Demand for providing reservations to Dhangar Community in Maharashtra as Scheduled Tribe

श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश) : महोदय, धनगर समाज महाराष्ट्र में 2.1 करोड़ की संख्या में हैं और ज्यादातर महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में भेड़, बकरियां पालने का काम करते हैं। यह समाज आर्थिक, शैक्षणिक, और सामाजिक दृष्टिकोण से बहुत ही पिछड़ा है। जाति आरक्षण विभाग द्वारा शैडयूल्ड ट्राइब में धनगड़ उल्लेख किया गया है, जो सही अर्थ में धनगर ही है। इसका कारण यह है कि धनगड़ और ध्नगर, इन दोनों शब्दों में केवल उच्चारण में फर्क होने के कारण यह समस्या पैदा हुई है। ये दोनों समाज एक ही है और इनमें कोई फर्क नहीं है। इसके चलते महाराष्ट्र में इस समाज को शैडयूल्ड ट्राइब के अन्तर्गत सुविधा नहीं मिल रही है, जो कि इस समाज के साथ सरासर अन्याय है।